INTERNATIONAL JOURNAL OF HISTORY

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
Impact Factor (RJIF): 5.63
www.historyjournal.net
IJH 2025; 7(8): 104-109
Received: 18-06-2025
Accepted: 12-07-2025

डॉ. अंजना कुमारी
अतिथि व्याख्याता विश्वविद्यालय इतिहास विभाग, टी.एम.बी.यू., भागलपुर, बिहार, भारत।

Corresponding Author:
डॉ. अंजना कुमारी
अतिथि व्याख्याता विश्वविद्यालय इतिहास विभाग, टी.एम.बी.यू., भागलपुर, बिहार, भारत।

भारत छोड़ो आंदोलन में बिहार की महिलाओं के योगदान का ऐतिहासिक विश्लेषण

अंजना कुमारी

DOI: https://www.doi.org/10.22271/27069109.2025.v7.i8b.498

सारांश
भारत छोड़ो आंदोलन, जिसे अगस्त क्रांति के नाम से भी जाना जाता है, 1942 में महात्मा गांधी के नेतृत्व में भारतीय जनता द्वारा ब्रिटिश शासन के खिलाफ चलाया गया। यह आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक निर्णायक और गहन चरण था, जिसने देशभर में जन-जागरूकता, प्रतिरोध और राजनीतिक सक्रियता की लहर पैदा की। ब्रिटिश सरकार के खिलाफ असहयोग, सत्याग्रह और नागरिक अवज्ञा इस आंदोलन की मुख्य रणनीतियाँ थीं। यह केवल राजनीतिक संघर्ष तक सीमित नहीं था, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक क्षेत्रों में भी इसका व्यापक प्रभाव दिखाई दिया। बिहार, स्वतंत्रता संग्राम के ऐतिहासिक केंद्रों में से एक रहा है। यहाँ के शहरी केंद्र जैसे पटना, गया और भागलपुर आंदोलन के मुख्य केंद्र बने, वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में भी महिलाओं और पुरुषों ने मिलकर ब्रिटिश नीतियों का विरोध किया। बिहार की महिलाओं ने इस आंदोलन में अपनी भूमिका निभाते हुए साहस, नेतृत्व और त्याग की मिसाल प्रस्तुत की। उनका योगदान केवल समर्थन करने तक सीमित नहीं रहा, बल्कि वे सक्रिय रूप से आंदोलन के नेतृत्व, संगठन और रणनीति में भी शामिल रहीं।[1] महिलाओं ने आंदोलन में विभिन्न रूपों में भागीदारी की। शहरी क्षेत्रों में वे सरकारी कार्यालयों, चाय और रेल स्टेशनों का घेराव करती थीं, सत्याग्रह और हड़तालों में भाग लेती थीं, और आंदोलन की सूचनाओं का आदान-प्रदान करती थीं। ग्रामीण क्षेत्रों में उन्होंने गांवों में जन-जागरूकता फैलाने, सत्याग्रह आयोजित करने और स्थानीय नेतृत्व का मार्गदर्शन करने में योगदान दिया।
सांस्कृतिक और सामाजिक माध्यमों का उपयोग करके महिलाओं ने आंदोलन की भावना को जन-जन तक पहुँचाया। नारे, लोकगीत, नाटक और सभाओं के माध्यम से जनता को ब्रिटिश शासन के खिलाफ संगठित किया गया। इस प्रकार महिलाओं ने न केवल प्रत्यक्ष संघर्ष में भाग लिया, बल्कि आंदोलन की विचारधारा और संदेश को व्यापक स्तर तक पहुँचाने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।[2] महिलाओं का साहस और त्याग उनके जेल संघर्ष और बलिदान में स्पष्ट दिखाई देता है। कई महिला क्रांतिकारिणियाँ गिरफ्तार हुईं, जेल में कठिनाइयाँ सहन कीं, और आंदोलन की भावना को जीवित रखने में अग्रणी रहीं। उनका यह बलिदान पुरुष स्वतंत्रता सेनानियों के लिए भी प्रेरणास्त्रोत बना।[3] इस शोध लेख का उद्देश्य बिहार की महिलाओं के योगदान को ऐतिहासिक दृष्टि से विश्लेषित करना है। इसमें महिलाओं की प्रमुख क्रांतिकारिणियों की भूमिकाओं, ग्रामीण और शहरी भागीदारी, जेल संघर्ष, सामाजिक-सांस्कृतिक योगदान, नेतृत्व और रणनीति का अध्ययन किया गया है। बिहार की महिलाओं ने न केवल आंदोलन को मजबूती दी, बल्कि स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में अपनी अमूल्य छाप भी छोड़ी। उनका योगदान यह स्पष्ट करता है कि स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी पुरुषों के संघर्ष के समान महत्वपूर्ण थी और उनके साहस, नेतृत्व और त्याग की मिसाल आज भी प्रेरणादायक है।

शब्द-कुंजी : भारत छोड़ो आंदोलन, अगस्त क्रांति, बिहार की महिला, महात्मा गांधी, संतोषी देवी, रोहिणी देवी

प्रस्तावना

बिहार में आंदोलन का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

भारत छोड़ो आंदोलन 1942 में महात्मा गांधी के नेतृत्व में चलाया गया, और इसका प्रभाव पूरे भारत में महसूस किया गया। बिहार, स्वतंत्रता संग्राम के महत्वपूर्ण केंद्रों में से एक रहा है। यहाँ आंदोलन की शुरुआत शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में हुई। शहरी क्षेत्रों जैसे पटना, गया, भागलपुर और मथुरा में आंदोलन ने विशेष रूप से महिलाओं की सक्रिय भागीदारी देखी। इन शहरों में महिलाएँ न केवल सड़कों पर उतरकर ब्रिटिश कार्यालयों का घेराव करती थीं, बल्कि हड़तालों, धरनों और विरोध प्रदर्शनों के माध्यम से प्रशासनिक कार्यों को बाधित करने में भी सक्रिय थीं।[4] उन्होंने ब्रिटिश सरकार के खिलाफ जन-जागरूकता अभियान चलाया, लोगों को सत्याग्रह और नागरिक अवज्ञा की आवश्यकता के प्रति जागरूक किया और युवा पीढ़ी को आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी और भी चुनौतीपूर्ण थी। वहाँ के सामाजिक और पारंपरिक बंधनों के कारण महिलाओं की सार्वजनिक सक्रियता सीमित थी, फिर भी उन्होंने गाँव-गाँव जाकर आंदोलन की सूचनाओं का प्रसार किया।[5] ग्रामीण महिलाओं ने सत्याग्रह में भाग लिया, विरोध प्रदर्शन आयोजित किए और स्थानीय नेताओं के साथ मिलकर आंदोलन को संगठित किया। कई गाँवों में महिलाओं ने अपने पुरुष साथियों के साथ मिलकर प्रदर्शन किया, किसानों और मजदूरों को आंदोलन में शामिल किया, और स्थानीय ब्रिटिश नीतियों के विरोध में साहसिक कदम उठाए।

बिहार में भारत छोड़ो आंदोलन ने महिलाओं को पारंपरिक सामाजिक और घरेलू सीमाओं से बाहर निकलने का अवसर प्रदान किया। यह आंदोलन महिलाओं के राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक नेतृत्व की शुरुआत का प्रतीक बना। महिलाओं ने केवल पुरुष नेताओं का समर्थन नहीं किया, बल्कि उन्होंने आंदोलन की रणनीति, संगठन और संदेश के प्रचार-प्रसार में भी निर्णायक भूमिका निभाई। उनके नेतृत्व और सक्रिय भागीदारी ने यह साबित किया कि स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी पुरुषों के समान ही महत्वपूर्ण और प्रभावशाली थी। इसके अलावा, बिहार की महिलाओं ने आंदोलन को सांस्कृतिक और सामाजिक माध्यमों के द्वारा भी मजबूत किया।[6] उन्होंने गीत, नारे, नाटक और स्थानीय सभाओं के माध्यम से जनता को आंदोलन में शामिल किया। यह सामाजिक जागरूकता आंदोलन के संदेश को ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी। इस प्रकार बिहार में भारत छोड़ो आंदोलन केवल राजनीतिक विरोध तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह महिलाओं की सामाजिक सक्रियता, नेतृत्व क्षमता और साहस का ऐतिहासिक उदाहरण बन गया। बिहार की महिलाओं की इस सक्रिय भागीदारी ने न केवल आंदोलन की सफलता में योगदान दिया, बल्कि भारतीय समाज में महिलाओं की राजनीतिक और सामाजिक स्थिति को भी सुदृढ़ किया।[7] उनके योगदान ने यह स्पष्ट कर दिया कि स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का साहस, त्याग और नेतृत्व पुरुषों के संघर्ष के समान ही महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक था।

बिहार की प्रमुख महिला क्रांतिकारिणियाँ और उनका योगदान

भारत छोड़ो आंदोलन में बिहार की महिलाओं ने साहस, नेतृत्व और त्याग की अद्वितीय मिसाल प्रस्तुत की। उन्होंने न केवल पुरुष नेताओं के नेतृत्व का समर्थन किया, बल्कि आंदोलन के संगठन, रणनीति और प्रचार में भी सक्रिय भाग लिया। बिहार की प्रमुख महिला क्रांतिकारिणियाँ निम्नलिखित हैं:

संतोषी देवी

संतोषी देवी बिहार की उन महिला क्रांतिकारिणियों में से एक थीं, जिन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान पटना को अपने नेतृत्व और सक्रिय भागीदारी का केंद्र बनाया। वे आंदोलन की अग्रणी थीं और उनके साहसिक कदमों ने बिहार के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका को विशेष महत्व दिया। संतोषी देवी ने कई ब्रिटिश कार्यालयों और सरकारी भवनों का घेराव किया, जहाँ उन्होंने शांतिपूर्ण लेकिन दृढ़ प्रतिरोध के माध्यम से ब्रिटिश अधिकारियों को संदेश दिया कि जनता अब उनके शासन को स्वीकार नहीं करेगी।[8] उन्होंने महिलाओं को सत्याग्रह, विरोध प्रदर्शन और हड़तालों में सक्रिय रूप से शामिल किया। उनका उद्देश्य केवल विरोध करना नहीं था, बल्कि महिलाओं में राजनीतिक चेतना और नागरिक अधिकारों के प्रति जागरूकता फैलाना भी था।संतोषी देवी ने महिलाओं को संगठित करना सिखाया। उनके नेतृत्व में महिलाएँ न केवल आंदोलन में शामिल हुईं, बल्कि उन्होंने स्थानीय समुदाय में भी आंदोलन की भावना को फैलाया। वे घरों, चाय-फोटों और पंचायतों में महिलाओं को जोड़तीं, उन्हें आंदोलन के उद्देश्य और रणनीति के बारे में समझातीं। इस प्रकार उन्होंने महिलाओं को पारंपरिक सामाजिक सीमाओं से बाहर निकलकर राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया।[9] उनकी सक्रिय भागीदारी का प्रभाव केवल महिलाओं तक सीमित नहीं रहा। स्थानीय जनता, विशेष रूप से युवा और ग्रामीण महिलाएँ, उनके नेतृत्व से प्रभावित हुईं और आंदोलन में शामिल हुईं। उनकी रणनीति और साहस ने बिहार में भारत छोड़ो आंदोलन को मजबूती दी और स्थानीय विरोध प्रदर्शनों को संगठित रूप दिया।संतोषी देवी का योगदान इस दृष्टि से ऐतिहासिक महत्व रखता है कि उन्होंने महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम का सक्रिय हिस्सा बनाने के साथ-साथ यह भी दिखाया कि आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी पुरुषों के संघर्ष के समान महत्वपूर्ण और निर्णायक हो सकती है।[10] उनकी निडरता, नेतृत्व क्षमता और संगठनात्मक कौशल आज भी स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में प्रेरणास्रोत हैं।

रोहिणी देवी

रोहिणी देवी बिहार की उन प्रमुख महिला क्रांतिकारिणियों में से एक थीं, जिन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान अपने साहस, धैर्य और नेतृत्व क्षमता के लिए विशेष पहचान बनाई। वे मुख्य रूप से जेल संघर्ष और सार्वजनिक विरोध प्रदर्शनों के लिए जानी जाती हैं। रोहिणी देवी का योगदान इस बात का प्रमाण है कि महिलाओं की भागीदारी स्वतंत्रता संग्राम में केवल समर्थन या प्रतीकात्मक गतिविधियों तक सीमित नहीं थी, बल्कि वे सशक्त नेतृत्व और निर्णायक संघर्ष का भी हिस्सा थीं।[11] आंदोलन के दौरान रोहिणी देवी ने कई बार गिरफ्तारी और जेल यातनाओं का सामना किया। जेल में रहते हुए भी उन्होंने अपने साहस और आत्मविश्वास से अन्य कैदियों को प्रेरित किया। उनका अनुशासन, धैर्य और संघर्षशीलता अन्य महिलाओं और युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत बनी। जेल में उन्होंने सत्याग्रह और अहिंसात्मक प्रतिरोध की भावना बनाए रखी, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि महिलाओं का योगदान केवल प्रदर्शन तक सीमित नहीं था, बल्कि इसमें बलिदान, त्याग और व्यक्तिगत कठिनाइयों का सामना करना भी शामिल था।रोहिणी देवी ने जेल से बाहर आने के बाद भी आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई।[12] उन्होंने स्थानीय महिलाओं को संगठित किया, उन्हें राजनीतिक जागरूकता दी और सत्याग्रह, हड़तालों तथा विरोध प्रदर्शनों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। उनका यह नेतृत्व न केवल महिलाओं को सशक्त बनाने वाला था, बल्कि उन्होंने ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में आंदोलन की रणनीति और संगठन को भी मजबूत किया।[13]

सामाजिक दृष्टि से रोहिणी देवी का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण था। उनके साहस और संघर्ष ने यह संदेश दिया कि महिलाएँ भी स्वतंत्रता संग्राम में निर्णायक भूमिका निभा सकती हैं, और उनके नेतृत्व से अन्य महिलाओं में भी आंदोलन में भाग लेने की प्रेरणा और आत्मविश्वास उत्पन्न हुआ।[14] इसके अलावा, रोहिणी देवी ने महिलाओं के बीच सामाजिक जागरूकता और राजनीतिक चेतना फैलाने का कार्य किया, जिससे बिहार में आंदोलन को व्यापक जनसमर्थन प्राप्त हुआ।रोहिणी देवी का यह संघर्ष और त्याग यह दर्शाता है कि स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का योगदान पुरुषों के योगदान के समान महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक था। उनकी निडरता, साहस, नेतृत्व और बलिदान आज भी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी का प्रतीक हैं।[15]

लक्ष्मी देवी

लक्ष्मी देवी बिहार की उन महिला क्रांतिकारिणियों में से एक थीं, जिन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान ग्रामीण क्षेत्रों में आंदोलन का नेतृत्व किया। वे यह दिखाने वाली महिलाओं में शामिल थीं कि स्वतंत्रता संग्राम में भागीदारी केवल शहरों तक सीमित नहीं थी, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएँ भी सक्रिय और निर्णायक भूमिका निभा सकती हैं।[16] लक्ष्मी देवी ने गाँव-गाँव जाकर महिलाओं को संगठित किया। उन्होंने स्थानीय महिलाओं को सत्याग्रह, विरोध प्रदर्शन और हड़तालों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। उनका उद्देश्य केवल विरोध प्रदर्शन करना नहीं था, बल्कि ग्रामीण महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता, नेतृत्व क्षमता और सामाजिक सक्रियता विकसित करना भी था। उनके प्रयासों से ग्रामीण महिलाओं ने न केवल आंदोलन में भाग लिया, बल्कि अपने परिवार और समुदाय में भी स्वतंत्रता संग्राम की भावना फैलाई।[17]

लक्ष्मी देवी ने जन-जागरूकता अभियान चलाकर स्थानीय जनता को ब्रिटिश नीतियों और अत्याचारों के खिलाफ सजग किया। उन्होंने महिलाओं और युवाओं को आंदोलन के उद्देश्यों और रणनीतियों से परिचित कराया और उन्हें संगठनात्मक गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। इस तरह उन्होंने ग्रामीण बिहार में आंदोलन की सामाजिक और राजनीतिक नींव मजबूत की।[18]

इन प्रमुख महिला क्रांतिकारिणियों संतोषी देवी, रोहिणी देवी और लक्ष्मी देवी के अलावा कई अनाम महिला योद्धाओं ने भी अपने गाँवों और शहरों में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने सत्याग्रह में भाग लिया, चुप्पी का विरोध किया, ब्रिटिश नीतियों के खिलाफ प्रतिरोध किया और स्थानीय जनता को आंदोलन में जोड़ने

का कार्य किया ।[19] ये अनाम नायिकाएँ भले ही इतिहास में कम जानी गई हों, लेकिन उनके साहस, त्याग और नेतृत्व ने बिहार में भारत छोड़ो आंदोलन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । लक्ष्मी देवी और अन्य महिलाओं के इस योगदान ने यह स्पष्ट किया कि महिलाएँ स्वतंत्रता संग्राम में निर्णायक शक्ति हो सकती हैं । उनके नेतृत्व, सक्रिय भागीदारी और बलिदान ने न केवल आंदोलन को मजबूती दी, बल्कि बिहार की महिलाओं की राजनीतिक और सामाजिक स्थिति को भी सशक्त किया ।[20] यह साबित करता है कि स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का योगदान पुरुषों के योगदान के समान ही महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक था ।

अन्नपूर्णा देवी – भागलपुर क्षेत्र में योगदान

अन्नपूर्णा देवी भागलपुर क्षेत्र की एक प्रमुख महिला क्रांतिकारिणी थीं, जिन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन में सत्याग्रह, विरोध प्रदर्शन और महिलाओं के संगठन के माध्यम से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । उन्होंने स्थानीय महिलाओं को ब्रिटिश शासन के खिलाफ संगठित किया और उन्हें सामाजिक और राजनीतिक चेतना से लैस किया । अन्नपूर्णा देवी ने गाँव-गाँव जाकर महिलाओं को आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया, उन्हें सत्याग्रह और विरोध प्रदर्शन के संगठनात्मक तरीके सिखाए और आंदोलन की रणनीति में सक्रिय योगदान दिया ।[21] उनके नेतृत्व में कई गाँवों में सांकेतिक हड़तालें, रैली और जन-जागरूकता अभियान आयोजित किए गए, जिससे स्थानीय जनता में आंदोलन के प्रति समर्थन और सक्रिय भागीदारी बढ़ी । उनके साहस और समर्पण के कारण कई बार उन्हें ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा गिरफ्तार किया गया ।[22] जेल में रहते हुए उन्होंने आंदोलन की भावना बनाए रखी और अन्य कैदियों को भी प्रेरित किया । अन्नपूर्णा देवी का योगदान इस बात का प्रमाण है कि स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का नेतृत्व, संगठन क्षमता और बलिदान आंदोलन को सफल बनाने में निर्णायक था ।

शांति देवी

शांति देवी ने पटना और आसपास के ग्रामीण इलाकों में महिलाओं को स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी और नेतृत्व के लिए प्रेरित किया । उन्होंने ग्रामीण महिलाओं को संगठित किया और उन्हें सत्याग्रह, विरोध प्रदर्शन और जन-जागरूकता अभियान में शामिल होने के लिए मार्गदर्शन दिया ।शांति देवी की सक्रियता के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं में राजनीतिक चेतना, सामाजिक सक्रियता और नेतृत्व क्षमता विकसित हुई ।[23] उन्होंने स्थानीय विरोध प्रदर्शन, बैठकों और सभाओं का आयोजन कर जनता को आंदोलन के महत्व और उद्देश्यों से अवगत कराया । उनके प्रयासों ने ग्रामीण इलाकों में ब्रिटिश नीतियों के खिलाफ विरोध को संगठित और प्रभावशाली बनाया ।इसके अतिरिक्त, शांति देवी ने महिलाओं को साहस और त्याग का महत्व समझाया, जिससे उन्होंने न केवल आंदोलन में भाग लिया, बल्कि स्थानीय समुदायों में अन्य महिलाओं को भी सक्रिय होने के लिए प्रेरित किया । [24] उनका योगदान यह दर्शाता है कि स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका केवल सहायक नहीं थी, बल्कि निर्णायक, नेतृत्वकारी और प्रेरणादायक थी ।

बिहार की महिलाओं का योगदान केवल सार्वजनिक प्रदर्शन और विरोध तक सीमित नहीं था । उन्होंने सामाजिक जागरूकता फैलाने, स्थानीय और व्यापक संगठन बनाने, और नेतृत्व का उदाहरण प्रस्तुत करने के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम को नई दिशा दी ।[25] उनके प्रयासों ने ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में लोगों में राजनीतिक चेतना बढ़ाई और महिलाओं को पारंपरिक सामाजिक सीमाओं से बाहर निकलकर सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया ।इन महिलाओं ने आंदोलन के दौरान न केवल सत्याग्रह, हड़ताल और विरोध प्रदर्शन में भाग लिया, बल्कि शिक्षा, जन-जागरूकता, और आंदोलन के संदेश का प्रचार करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ।[26] उनका यह योगदान यह साबित करता है कि स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी पुरुष नेताओं के समान ही निर्णायक, प्रभावशाली और प्रेरणादायक थी । [27] इस प्रकार बिहार की महिलाओं ने अपने साहस, नेतृत्व और बलिदान के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम को मजबूती प्रदान की । उनका योगदान इतिहास में महिलाओं की सशक्त भूमिका और समाज में उनके अधिकारों की जागरूकता का प्रतीक बन गया । यह स्पष्ट करता है कि स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी केवल सहायक या पारंपरिक भूमिका तक सीमित नहीं थी, बल्कि वे समान भागीदार, प्रेरक और नेतृत्वकर्ता थीं ।

महिला भागीदारी के स्वरूप

भारत छोड़ो आंदोलन में बिहार की महिलाओं ने विभिन्न स्वरूपों में सक्रिय और निर्णायक भागीदारी निभाई । उनका योगदान केवल विरोध प्रदर्शन तक सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने आंदोलन को संगठित, प्रभावशाली और जन-आधारित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । बिहार की महिलाओं ने शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में आंदोलन को फैलाने, समाज में जागरूकता पैदा करने और राजनीतिक चेतना को मजबूत करने में योगदान दिया । उनके प्रयासों ने यह साबित किया कि स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का योगदान पुरुषों के योगदान के समान ही निर्णायक और प्रेरणादायक था । शहरी क्षेत्रों में महिलाएँ सरकारी कार्यालयों और ब्रिटिश प्रशासनिक केन्द्रों का घेराव, सांकेतिक हड़तालें और जन-जागरूकता अभियान आयोजित करती थीं । पटना, गया और भागलपुर जैसे शहरों में उन्होंने आंदोलन की सूचनाओं का आदान-प्रदान किया और जनता को सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया ।[28] वहीं, ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ स्थानीय आंदोलनों, सत्याग्रह और विरोध प्रदर्शन में सक्रिय थीं । उन्होंने गाँव-गाँव जाकर जनता को जागरूक किया, आंदोलन के संदेश का प्रचार किया और पुरुष क्रांतिकारियों के साथ मिलकर आंदोलन का संगठन किया । इसके अतिरिक्त, बिहार की महिलाओं ने सांस्कृतिक और सामाजिक माध्यमों का उपयोग कर आंदोलन की पहुँच और प्रभाव को बढ़ाया । उन्होंने नारे, गीत, नाटक, सामाजिक सभाएँ और बैठकों के माध्यम से जनता को आंदोलन के महत्व और उद्देश्यों से अवगत कराया । इस प्रकार उन्होंने केवल विरोध प्रदर्शन नहीं किया, बल्कि समाज में राजनीतिक और सामाजिक चेतना पैदा की ।[29]

महिलाओं की भागीदारी में जेल संघर्ष और बलिदान का भी महत्वपूर्ण स्थान था । कई महिला क्रांतिकारिणियाँ गिरफ्तारी और जेल में बंद होने के बावजूद आंदोलन की भावना बनाए रखती थीं । उनका साहस और त्याग अन्य स्वतंत्रता सेनानियों और ग्रामीण जनता के लिए प्रेरणास्रोत बना । साथ ही, बिहार की महिलाओं ने नेतृत्व और रणनीति में भी निर्णायक भूमिका निभाई । उन्होंने स्थानीय समूहों को संगठित किया, विरोध प्रदर्शन और सत्याग्रह की योजनाएँ बनाई और आंदोलन के संदेश को व्यापक रूप से फैलाया । उनका संगठनात्मक कौशल, साहस और रणनीतिक दृष्टि आंदोलन को संगठित, प्रभावशाली और जन-आधारित बनाने में निर्णायक साबित हुई ।इस प्रकार, बिहार की महिलाओं की भागीदारी का स्वरूप बहुआयामी, संगठित और प्रेरणादायक था । उनके योगदान ने यह स्पष्ट किया कि स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी केवल सहायक या सीमित नहीं थी, बल्कि वे सशक्त, नेतृत्वकारी और निर्णायक भूमिका निभा सकती थीं ।[30]

शहरी महिलाओं की भूमिका

भारत छोड़ो आंदोलन में बिहार की शहरी महिलाओं ने अत्यंत सक्रिय और साहसपूर्ण भागीदारी दिखाई । उन्होंने आंदोलन को संगठित, प्रभावशाली और व्यापक बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया । शहरी महिलाओं की भूमिका के प्रमुख स्वरूप निम्नलिखित हैं: सरकारी कार्यालयों का घेराव और विरोध प्रदर्शन: शहरी महिलाओं ने सरकारी और ब्रिटिश कार्यालयों का घेराव कर विरोध प्रदर्शन आयोजित किए ।[31] उनका यह कदम न केवल ब्रिटिश अधिकारियों के लिए चेतावनी का प्रतीक था, बल्कि जनता के बीच सामाजिक और राजनीतिक जागरूकता फैलाने का माध्यम भी बना । महिलाओं की यह सक्रिय भागीदारी दिखाती है कि वे केवल समर्थन करने वाली नहीं थीं, बल्कि आंदोलन की सशक्त नेतृत्वकर्ता भी थीं । ब्रिटिश प्रशासन के खिलाफ सांकेतिक हड़तालें: कई शहरों में महिलाओं ने सांकेतिक हड़तालों और आंदोलनात्मक गतिविधियों का आयोजन किया । ये हड़तालें शांतिपूर्ण थीं, लेकिन इसके माध्यम से उन्होंने ब्रिटिश शासन

के खिलाफ विरोध व्यक्त किया और जनता में सत्याग्रह और नागरिक अवज्ञा की भावना उत्पन्न की।[32]

गुप्त संदेश और समाचार का आदान-प्रदान: शहरी महिलाओं ने पटना, गया और भागलपुर जैसे शहरों में आंदोलन की सूचनाओं और गुप्त संदेशों का आदान-प्रदान किया । उन्होंने जेल में बंद नेताओं, ग्रामीण कार्यकर्ताओं और अन्य आंदोलनकारियों के बीच संपर्क बनाए रखा। इस तरह उनके कार्य ने आंदोलन को संचार और संगठन की दृष्टि से मजबूती प्रदान की । शहरी महिलाओं की इन गतिविधियों ने यह सुनिश्चित किया कि आंदोलन केवल सीमित क्षेत्रों तक नहीं रहे, बल्कि सभी वर्गों और क्षेत्रों में प्रभावी रूप से फैले। उनके साहस, सक्रियता और संगठनात्मक कौशल ने बिहार में भारत छोड़ो आंदोलन को सशक्त और व्यापक बनाने में निर्णायक भूमिका निभाई।

ग्रामीण महिलाओं की भूमिका

भारत छोड़ो आंदोलन में बिहार की ग्रामीण महिलाओं ने स्वतंत्रता संग्राम में न केवल सक्रिय भागीदारी दिखाई, बल्कि अपने साहस, नेतृत्व और संगठनात्मक क्षमता के माध्यम से आंदोलन को ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुँचाने में निर्णायक भूमिका निभाई । ग्रामीण महिलाओं का योगदान शहरी महिलाओं की भूमिका से भिन्न था, क्योंकि उन्हें सामाजिक और पारंपरिक बाधाओं का सामना करना पड़ता था। इसके बावजूद उन्होंने अपने गाँवों में ब्रिटिश शासन की नीतियों और अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठाई। गाँवों में करों, कर संग्रहण, भूमि सुधारों और अन्य औपनिवेशिक नीतियों के खिलाफ उनका प्रतिरोध यह दर्शाता है कि स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी केवल प्रदर्शन तक सीमित नहीं थी, बल्कि उन्होंने सामाजिक और राजनीतिक जागरूकता भी फैलाई । ग्रामीण महिलाएँ स्थानीय आंदोलनों और चुप्पी का प्रतिरोध करने में अग्रणी थीं। वे गाँव-गाँव जाकर सत्याग्रह और विरोध प्रदर्शन में भाग लेती थीं और लोगों को आंदोलन में शामिल होने के लिए प्रेरित करती थीं । उनके संघर्ष और निडरता ने पुरुष क्रांतिकारियों के प्रयासों को भी मजबूती दी और स्थानीय समुदाय में आंदोलन की पैठ बढ़ाई। इस प्रकार उनका योगदान न केवल सांकेतिक विरोध था, बल्कि यह आंदोलन के वास्तविक संगठन और संचालन में शामिल था।[33]

इसके अतिरिक्त, ग्रामीण महिलाएँ आंदोलन में पुरुषों की सहायता और संगठनात्मक कार्यों में भी सक्रिय थीं। उन्होंने प्रदर्शन के समय आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराई, आंदोलन की सूचनाओं और गुप्त संदेशों का आदान-प्रदान किया, और स्थानीय जनता को आंदोलन में जोड़ने का कार्य किया । कई ग्रामीण महिलाएँ नेताओं और अन्य क्रांतिकारियों के मार्गदर्शन में गाँवों में जन-जागरूकता अभियान चलाती थीं, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में आंदोलन का प्रभाव बढ़ा । ग्रामीण महिलाओं की यह सक्रिय भागीदारी यह भी दिखाती है कि स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका केवल सहायक या पारंपरिक भूमिका तक सीमित नहीं थी। उनका योगदान आंदोलन को ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में प्रभावी, संगठित और जन-आधारित बनाने में निर्णायक साबित हुआ । इस प्रकार बिहार की ग्रामीण महिलाओं ने साहस, नेतृत्व और बलिदान के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम में अपने स्थान को सुनिश्चित किया।[34]

सांस्कृतिक और सामाजिक माध्यम से योगदान

भारत छोड़ो आंदोलन में बिहार की महिलाओं ने आंदोलन को केवल प्रदर्शन तक सीमित नहीं रखा, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक माध्यमों के उपयोग के माध्यम से जनता में जागरूकता फैलाने का महत्वपूर्ण कार्य किया । उन्होंने आंदोलन के संदेश को लोगों तक पहुँचाने के लिए नारे, गीत और नाटक का व्यापक उपयोग किया। स्वतंत्रता संग्राम के गीत और नाटक न केवल मनोरंजन का साधन थे, बल्कि जनता में राजनीतिक चेतना, आंदोलन के उद्देश्यों और ब्रिटिश शासन के प्रति विरोध की भावना पैदा करने का प्रभावशाली माध्यम भी थे। नारे और गीतों के माध्यम से महिलाओं ने गाँव और शहर के लोगों में सत्याग्रह और असहयोग आंदोलन की जानकारी पहुँचाई और जनता को सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया। इसके अतिरिक्त, महिलाओं ने अपने गाँवों और शहरों में सामाजिक बैठकों और सभाओं का आयोजन किया, ताकि जनता को आंदोलन के महत्व और उद्देश्यों से अवगत कराया जा सके। इन बैठकों और सभाओं में महिलाओं ने आंदोलन की रणनीति, सत्याग्रह के सिद्धांत और ब्रिटिश शासन के खिलाफ प्रतिरोध के तरीके लोगों को समझाए। उन्होंने महिलाओं और पुरुषों दोनों को आंदोलन में शामिल होने के लिए प्रेरित किया, जिससे आंदोलन का सामाजिक और राजनीतिक आधार मजबूत हुआ।[35]

सांस्कृतिक और सामाजिक माध्यमों के इस प्रभावशाली प्रयोग ने बिहार में भारत छोड़ो आंदोलन को व्यापक जन-समर्थन दिलाया । इन गतिविधियों ने यह सुनिश्चित किया कि आंदोलन केवल शहरी केंद्रों तक सीमित न रहे, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी फैलकर जनता के बीच स्वतंत्रता की भावना और राजनीतिक चेतना का संचार करे। इस प्रकार महिलाओं की यह भूमिका न केवल आंदोलन को सक्रिय और संगठित बनाने वाली थी, बल्कि उनके नेतृत्व, संगठनात्मक क्षमता और सामाजिक प्रभाव को भी स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करती थी।

कैद और बलिदान

भारत छोड़ो आंदोलन में बिहार की महिलाओं ने आंदोलन को केवल विरोध प्रदर्शन तक सीमित नहीं रखा, बल्कि गिरफ्तारी और जेल संघर्ष के माध्यम से अपने साहस और प्रतिबद्धता का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया। अधिकांश महिला क्रांतिकारिणियाँ ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा गिरफ्तार की गईं। जेल में उनके ऊपर मानसिक और शारीरिक दबाव डाला गया, लेकिन उन्होंने न केवल साहस और धैर्य बनाए रखा, बल्कि अन्य कैदियों को भी प्रेरित और संगठित किया । उनका यह संघर्ष यह दर्शाता है कि महिलाओं का योगदान स्वतंत्रता संग्राम में केवल प्रतीकात्मक नहीं, बल्कि सशक्त, निर्णायक और नेतृत्वकारी था। उदाहरण के तौर पर, रोहिणी देवी कई बार गिरफ्तार हुईं और जेल में रहते हुए अन्य कैदियों को संगठन और अनुशासन के साथ प्रेरित करती रहीं । उनकी यह कार्यशैली जेल में भी आंदोलन की भावना बनाए रखने में सहायक रही। इसी प्रकार, संतोषी देवी को भी आंदोलन के दौरान गिरफ्तार किया गया था, लेकिन उन्होंने जेल में रहते हुए महिलाओं को संगठित किया और आंदोलन के उद्देश्यों को लोगों तक पहुँचाने का कार्य जारी रखा। ग्रामीण क्षेत्रों की कई अनाम महिला क्रांतिकारिणियाँ भी अपने गाँवों में सत्याग्रह और विरोध प्रदर्शन के कारण गिरफ्तार हुईं। उन्होंने जेल के भीतर और बाहर अपने समुदाय को आंदोलन से जोड़ने का साहसिक प्रयास किया।[36]

कई महिलाओं ने अपने परिवार और समाज के विरोध के बावजूद स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया। कई परिवार और समाज के लोग महिलाओं की भागीदारी के खिलाफ थे, क्योंकि उस समय महिलाओं को सार्वजनिक जीवन में सक्रिय भूमिका निभाना स्वीकार्य नहीं था। इसके बावजूद ये महिलाएँ अपने व्यक्तिगत जोखिमों और सामाजिक बाधाओं को पार कर आंदोलन में भागीदार बनीं। उनका यह साहस यह दर्शाता है कि स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी पुरुषों के योगदान के समान ही निर्णायक और प्रेरणादायक थी। जेल संघर्ष और बलिदान का यह चरण महिलाओं के लिए केवल व्यक्तिगत संघर्ष नहीं था, बल्कि इसके सामाजिक और राजनीतिक आयाम भी थे । इन महिलाओं ने जेल में अपने बलिदान के माध्यम से यह संदेश दिया कि महिलाएँ स्वतंत्रता संग्राम में पुरुषों के समान निर्णायक भूमिका निभा सकती हैं। उनके संघर्ष ने समाज में महिलाओं की राजनीतिक चेतना और अधिकारों की दिशा को भी प्रभावित किया। इस प्रकार, बिहार की महिला क्रांतिकारिणियों का जेल संघर्ष और बलिदान स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में साहस, नेतृत्व और समाज परिवर्तन का प्रतीक बन गया।[37]

महिला नेतृत्व और रणनीति

भारत छोड़ो आंदोलन में बिहार की महिलाओं ने केवल आंदोलन में भागीदारी ही नहीं दिखाई, बल्कि सशक्त नेतृत्व और रणनीतिक भूमिका भी निभाई। उन्होंने स्थानीय और क्षेत्रीय स्तर पर समूहों, समितियों और महिला मोर्चों का संगठन किया, ताकि आंदोलन के संदेश को शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में प्रभावी रूप से पहुँचाया जा सके। उनके नेतृत्व में महिलाएँ न केवल प्रदर्शन में शामिल होती

थीं, बल्कि आंदोलन की रणनीति, योजना और संचालन में भी सक्रिय रूप से योगदान देती थीं। संतोषी देवी का उदाहरण लिया जाए, तो उन्होंने पटना में महिलाओं को संगठित किया और उन्हें सरकारी कार्यालयों का घेराव, सत्याग्रह और जन-जागरूकता अभियान में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रशिक्षित किया। उनका यह नेतृत्व महिलाओं को साहस और आत्मविश्वास प्रदान करता था, जिससे वे आंदोलन में केवल भागीदारी तक सीमित नहीं रहीं। इसी तरह, लक्ष्मी देवी ने ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को जागरूक किया और उन्हें स्थानीय विरोध प्रदर्शन, सत्याग्रह और आंदोलन संदेश का प्रचार करने में मार्गदर्शन दिया। उन्होंने ग्रामीण महिलाओं को यह विश्वास दिलाया कि उनका योगदान केवल पुरुष नेताओं के सहायक के रूप में नहीं, बल्कि स्वतंत्र और निर्णायक भूमिका में महत्वपूर्ण है।[38]

महिलाओं ने आंदोलन की रणनीति तैयार करने में भी सक्रिय योगदान दिया। उन्होंने सांकेतिक हड़तालों, मार्च, विरोध प्रदर्शन और सभाओं के आयोजन की योजना बनाई, जिससे आंदोलन का प्रभाव व्यापक हुआ। उनके नेतृत्व के कारण आंदोलन केवल शहरी केंद्रों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी व्यापक जन-जागरूकता और समर्थन उत्पन्न हुआ। इसके अलावा, बिहार की महिलाओं ने अन्य महिलाओं और युवाओं को भी सशक्त नेतृत्व और राजनीतिक सक्रियता के लिए प्रेरित किया। उनके साहस और संगठनात्मक कौशल ने यह प्रमाणित किया कि स्वतंत्रता संग्राम केवल पुरुषों का संघर्ष नहीं था, बल्कि महिलाओं का भी समान और निर्णायक योगदान था। महिलाओं के नेतृत्व और रणनीति ने आंदोलन को संगठित, प्रभावशाली और जन-आधारित बनाने में निर्णायक भूमिका निभाई। इस प्रकार, बिहार की महिलाओं का नेतृत्व और रणनीति स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में महिलाओं की राजनीतिक चेतना, साहस, संगठनात्मक क्षमता और समाज परिवर्तन की दिशा का प्रतीक बन गया।[39] उनके कार्य यह दर्शाते हैं कि आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी केवल सहायक या सीमित भूमिका तक नहीं थी, बल्कि वे सशक्त निर्णयकर्ता और प्रेरक नेतृत्वकर्ता थीं, जिन्होंने पूरे आंदोलन को मजबूती, दिशा और उद्देश्य प्रदान किया।

भारत छोड़ो आंदोलन में बिहार की महिलाओं का योगदान ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक रहा है। उन्होंने साहस, नेतृत्व, त्याग और बलिदान के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम को मजबूती प्रदान की। उनके योगदान ने आंदोलन को केवल शहरी केंद्रों तक सीमित नहीं रहने दिया, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी व्यापक जन-जागरूकता और सक्रिय समर्थन स्थापित किया। बिहार की महिलाओं ने शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में आंदोलन के संदेश का प्रचार, सत्याग्रह और विरोध प्रदर्शन में भागीदारी, सांस्कृतिक माध्यमों द्वारा जन-जागरूकता फैलाना, और जेल संघर्ष एवं बलिदान जैसे क्षेत्रों में निर्णायक भूमिका निभाई। उनके साहस और संघर्ष ने यह साबित किया कि स्वतंत्रता संग्राम केवल पुरुषों का नहीं, बल्कि महिलाओं का भी समान और निर्णायक संघर्ष था। इतिहास में इन वीरांगनाओं की भूमिका केवल स्वतंत्रता संग्राम तक सीमित नहीं रहती; उनका योगदान आज भी महिलाओं के सशक्तिकरण, समानता और समाज में राजनीतिक सक्रियता के लिए प्रेरणास्रोत है। उनके साहस, नेतृत्व और त्याग की कहानी आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है और यह स्पष्ट करती है कि समाज में परिवर्तन और राष्ट्रीय विकास में महिलाओं का योगदान निर्णायक और अमूल्य होता है। इस प्रकार, बिहार की महिलाओं का भारत छोड़ो आंदोलन में योगदान न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह समाज में महिलाओं की स्थिति, उनकी राजनीतिक चेतना और नेतृत्व क्षमता के मूल्य को भी उजागर करता है। उनकी प्रेरक कहानियाँ आज भी महिलाओं को सशक्त, साहसी और सक्रिय नागरिक बनने के लिए मार्गदर्शन करती हैं।

संदर्भ

1. जैन, सुनीता, स्वतंत्रता संग्राम में बिहार की महिलाएँ, नई दिल्ली: राधा प्रकाशन, 2005, पृ. 47।
2. मिश्रा, रामकृष्ण, बिहार और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन, पटना: ज्ञानवाणी पब्लिकेशन्स, 1998, पृ. 112-113।
3. प्रसाद, सी.के., महिला सशक्तिकरण और स्वतंत्रता संग्राम में योगदान, दिल्ली: सृजन पब्लिकेशन्स, 2010, पृ. 79।
4. शर्मा, अंशुल, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका, मुंबई: प्रज्ञा पब्लिकेशन्स, 2002, पृ. 48।
5. सिंह, जगदीश, बिहार में भारत छोड़ो आंदोलन, पटना: बिहार पब्लिकेशन्स, 1995, पृ. 50-52।
6. झा, रमेश, महिला क्रांतिकारिणियाँ और स्वतंत्रता संग्राम, दिल्ली: राष्ट्रीय प्रकाशन, 2008, पृ. 95।
7. वही, पृ. 97
8. वही, पृ. 102-103.
9. वर्मा, सुरेश, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का सामाजिक और सांस्कृतिक पक्ष, नई दिल्ली: ऐतिहासिक शोध केंद्र, 2001, पृ. 125।
10. कुमार, अजय, स्वतंत्रता आंदोलन में ग्रामीण महिलाओं का योगदान, पटना: ज्ञानदीप पब्लिकेशन्स, 2006, पृ. 28।
11. देवी, सीमा, महिलाओं का साहस और बलिदान: भारत छोड़ो आंदोलन का अध्ययन, दिल्ली: सृजनिता पब्लिकेशन्स, 2012, पृ. 60-65।
12. त्रिपाठी, रवीन्द्र, बिहार के स्वतंत्रता सेनानी और महिला आंदोलनकारी, पटना: राजकमल पब्लिकेशन्स, 1999, पृ. 77।
13. चौधरी, प्रिया, जेल संघर्ष और महिला नेतृत्व, दिल्ली: न्याय पब्लिकेशन्स, 2007, पृ. 35।
14. नंदन, अरुण, स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की राजनीतिक सक्रियता, मुंबई: संवाद पब्लिकेशन्स, 2003, पृ. 48।
15. सिंह, कविता, सांस्कृतिक आंदोलनों में महिला योगदान, पटना: ज्ञानसागर पब्लिकेशन्स, 2011, पृ. 15-40।
16. झा, रेखा, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और महिला नेतृत्व, दिल्ली: प्रज्ञा शोध केंद्र, 2009, पृ. 87।
17. प्रसाद, नीलम, ग्रामीण महिलाओं और स्वतंत्रता आंदोलन, पटना: विकास पब्लिकेशन्स, 2004, पृ. 27।
18. देवी, अनुराधा, महिला क्रांति और सामाजिक जागरूकता, नई दिल्ली: भारत शोध संस्थान, 2015, पृ. 59।
19. कुमार, विनय, स्वतंत्रता संग्राम में बिहार की महिलाओं का संघर्ष और योगदान, पटना: इतिहास भवन पब्लिकेशन्स, 2000, पृ. 13।
20. श्रीवास्तव, तारा रानी, भारत छोड़ो आंदोलन में पटना की महिलाओं की भूमिका, पटना, 1943, पृ. 12-18।
21. सिंह, रामप्रसाद, भारत छोड़ो आंदोलन में बिहार, पटना, 1989, पृ. 88।
22. नेहरू, जवाहरलाल, भारत: 1942-1947, नई दिल्ली, 1948, पृ. 215।
23. तिवारी, लक्ष्मी देवी, महिला नेतृत्व और रणनीति, गया, 1950, पृ. 37।
24. वही,पृ. 45
25. बनर्जी, सुमती, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी, कोलकाता, 1962, पृ. 120-125।
26. चतुर्वेदी, एस.पी., बिहार में स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका, पटना, 1975, पृ. 50-56।
27. श्रीवास्तव, आर.के., बिहार और भारत छोड़ो आंदोलन, पटना, 1980, पृ. 77-79।
28. वही, पृ. 87
29. वही
30. ***उपरोक्त,*** श्रीवास्तव, तारा रानी, पृ. 36-39.
31. कुमार, राजेश, भारत छोड़ो आंदोलन में बिहार की महिलाओं का संगठन, जर्नल ऑफ इंडियन हिस्ट्री, वॉल्यूम 10, अंक 2, 1990, पृ. 44।
32. मिश्रा, सुनीता, स्वतंत्रता संग्राम में सांस्कृतिक गतिविधियाँ और महिलाएँ, पटना, 1995, पृ. 22-23।
33. चौधरी, संतोष, महिला स्वतंत्रता सेनानियों के जेल अनुभव, पटना, 1943, पृ. 14-17।

34. घोष, अंजली, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महिला नेताओं की भूमिका, दिल्ली, 1982, पृ. 99।
35. सिंह, बी.पी., बिहार में ग्रामीण महिलाओं और भारत छोड़ो आंदोलन, जर्नल ऑफ बिहार स्टडीज, वॉल्यूम 5, अंक 1, 1978, पृ. 34।
36. तिवारी, रोहिणी देवी, ग्रामीण स्तर पर महिलाओं की भागीदारी, पटना, 1944, पृ. 5-9।
37. मुखर्जी, अपर्णा, भारत छोड़ो आंदोलन में महिलाओं की सामाजिक और राजनीतिक भूमिका, कोलकाता, 1985, पृ. 60-64।
38. वर्मा, उषा, भारतीय महिलाओं की क्रांतिकारी भूमिका, मुंबई, 2010, पृ. 87।
39. कुमार, अजय, बिहार में स्वतंत्रता संग्राम: पुरुष और महिला दृष्टि, पटना, 2002, पृ. 60-65।